

आज़ादी के तराने
आलोक शुकला

आलोक प्रकाशन



आज़ादी के तराने

C- 2018 आलोक शुक्ला

आलोक प्रकाशन

अपनी बात

भारत की आज़ादी की लड़ाई में कुछ गीतों का बड़ा महत्व रहा है. न जाने कितने वीरों ने इन गीतों को गाते हुए आज़ादी के लिए अपने प्राण तक कुर्बान कर दिए. न जाने कितनों ने लाठियां और गोलियां खाईं. न जाने कितने नौजवानों में अपनी जवानी के कई साल जेल की सलाखों के पीछे काट दिये. यह गीत आज भी हमें रोमांचित कर देते हैं. मैंने कुछ दिनों पहले आज़ादी के इन तरानों पर ब्लागों की एक श्रंखला लिखी थी. यह ई-पुस्तक उन्हीं ब्लागों को जोड़कर बनाई गई है. यह गीत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने स्वतंत्रता की लड़ाई के दिनों में थे.

जहां कहीं भी मुझे इन गीतों के वीडियो यू-ट्यूब पर मिले हैं उनके लिंक मैंने इस पुस्तक में दे दिये हैं. आप यदि इन गीतों के वीडियो देखना चाहें तो अपनी डिवाइस पर इंटरनेट चालू करके, ई-पुस्तक में दिये गए वीडियो के चित्र पर क्लिक करें. गीत का वीडियो आपके ब्राउज़र में प्ले होने लगेगा.

भारत की पवित्र धरती को यह नमन मेरा भी है और आज़ादी के लिये अपनी जान न्योछावर करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धांजली भी है.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पेज
1	वंदे मातरम	1
2	सरफ़रोशी की तमन्ना	18
3	आज़ाद हिन्द फौज के कौमी तराने	29
4	झंडा गीत	46
5	सारे जहाँ से अच्छा	51
6	झांसी की रानी	61

वंदे मातरम

वंदे मातरम के रचनाकार बंकिमचन्द्र चटर्जी तत्कालीन ब्रिटिश सरकार में डिप्टी कलेक्टर के पद पर थे, परन्तु वे देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण थे. उन्होंने 1876 के आसपास इस गीत की रचना की. बाद में उन्होंने अपने उपन्यास आनन्द मठ में इसे शामिल किया. गीत के पहले 2 पद संस्कृत में हैं. बाद के पद मिली-जुली संस्कृत एवं बाँग्ला भाषा में हैं. बाद वाले इन सभी पदों में मातृभूमि की दुर्गा के रूप में स्तुति की गई है. यह उपन्यास अंग्रेजी शासन और जमींदारों के विरुद्ध हुए सन्यासी विद्रोह पर आधारित था. उपन्यास में यह गीत भवानन्द नाम का एक सन्यासी गाता है. कहा जाता है कि यह गीत उन्होंने सियालदह से नैहाटी आते वक्त ट्रेन में लिखा था.



बंकिमचन्द्र चटर्जी

वंदे मातरत गीत का संस्कृत मूल गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम्
मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम्
मातरम्।

शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥ १॥

सप्त-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
द्विसप्त-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं
नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं
मातरम्॥ २॥

तुमि विद्या, तुमि धर्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे॥ ३॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलाम्
मातरम्॥४॥

वन्दे मातरम्
श्यामलाम् सरलाम्
सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीं भरणीं
मातरम्॥ ५॥

वंदेमातरम का अंग्रेजी अनुवाद

आनंद मठ उपन्यास और उसके साथ ही वंदे मातरम् गीत का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद नरेस चंद्र सेनगुप्ता ने “The Abbey of Bliss” के नाम से किया था. इस गीत का अंग्रेजी में पद्य एवं गद्य दोनों में ही अनुवाद श्री अरविन्द घोष ने किया है. गीत का अंग्रेजी में पद्यानुवाद पहले देखिये -

English Translation of Vandematram by Shri Arvind Ghosh in Verse form

Mother, I bow to thee!
Rich with thy hurrying streams,
Bright with thy orchard gleams,
Cool with thy winds of delight,
Dark fields waving, Mother of might,
Mother free.

Glory of moonlight dreams
Over thy branches and lordly streams,
Clad in thy blossoming trees,
Mother, giver of ease,
Laughing low and sweet!
Mother, I kiss thy feet,
Speaker sweet and low!
Mother, to thee I bow.

Who hath said thou art weak in thy lands,
When the swords flash out in twice seventy million hands
And seventy million voices roar
Thy dreadful name from shore to shore?
With many strengths who art mighty and stored,
To thee I call, Mother and Lord!
Thou who savest, arise and save!
To her I cry who ever her foemen drave
Back from plain and sea
And shook herself free.

Thou art wisdom; thou art law,
Thou our heart, our soul, our breath,
Thou the love divine, the awe
In our hearts that conquers death.
Thine the strength that nerves the arm,
Thine the beauty, thine the charm.
Every image made divine
In our temples is but thine.

Thou art Durga, Lady and Queen,
With her hands that strike and her swords of sheen,
Thou art Lakshmi lotus-throned,
And the Muse a hundred-toned.
Pure and perfect without peer,
Mother, lend thine ear.
Rich with thy hurrying streams,
Bright with thy orchard gleams,
Dark of hue, O candid-fair
In thy soul, with jewelled hair
And thy glorious smile divine,
Loveliest of all earthly lands,
Showering wealth from well-stored hands!
Mother, mother mine!
Mother sweet, I bow to thee,
Mother great and free!

श्री अरविन्द ने अपने इस पद्यानुवाद के संबंध में स्वयं यह लिखा है कि बांग्ला भाषा की मूल मिठास का पद्य के रूप में किसी अन्य भाषा में अनुवाद कठिन है इसलिये वे इस गीत का गद्य के रूप में अनुवाद भी कर रहे हैं - "It is difficult to translate the National Anthem of Bengal into verse in another language owing to its unique union of sweetness, simple directness and high poetic force. All attempts in this direction have been failures. In order, therefore, to bring the reader unacquainted with Bengali nearer to the exact force of the

original, I give the translation in prose line by line.” आइये उनके व्दारा किये गये गद्यानुवाद को भी देखें -

English Translation of Vandematram by Shri Arvind Ghosh in Prose form

I bow to thee, Mother,
richly-watered, richly-fruited,
cool with the winds of the south,
dark with the crops of the harvests,
the Mother!

Her nights rejoicing in the glory of the moonlight,
her lands clothed beautifully with her trees in flowering bloom,
sweet of laughter, sweet of speech,
the Mother, giver of boons, giver of bliss!

Terrible with the clamorous shout of seventy million throats,
and the sharpness of swords raised in twice seventy million hands,
who sayeth to thee, Mother, that thou art weak?
Holder of multitudinous strength,
I bow to her who saves,
to her who drives from her the armies of her foemen,
the Mother!

Thou art knowledge, thou art conduct,
thou our heart, thou our soul,
for thou art the life in our body.
In the arm thou art might, O Mother,
in the heart, O Mother, thou art love and faith,
it is thy image we raise in every temple.

For thou art Durga holding her ten weapons of war,
Kamala at play in the lotuses
and Speech, the goddess, giver of all lore,
to thee I bow!

I bow to thee, goddess of wealth,
pure and peerless,
richly-watered, richly-fruited,
the Mother!

I bow to thee, Mother,
dark-hued, candid,
sweetly smiling, jewelled and adorned,
the holder of wealth, the lady of plenty,
the Mother!

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में वंदे मातरम् गीत

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान यह गीत बहुत लोकप्रिय हो गया था. सन् 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने यह गीत गाया था. सन् 1901 में कलकत्ता अधिवेशन में श्री चरणदास ने और सन् 1905 के बनारस अधिवेशन में यह गीत सरलादेवी चौधरानी ने पुनः गाया. लाला लाजपत राय ने लाहौर से वन्दे मातरम् नाम के 'जर्नल' का प्रकाशन किया. अंग्रेजों की गोली का शिकार बनकर दम तोड़नेवाली आजादी की दीवानी मातंगिनी हाजरा की जुबान पर आखिरी शब्द "वन्दे मातरम्" ही थे. 1905 में हीरालाल सेन ने पहली राजनीतिक फिल्म बनाई जिसका अंत वंदे मातरम् के नारे के साथ ही हुआ. सन् 1907 में मेडम भीखाजी कामा ने जर्मनी के स्टुटगार्ट में जो तिरंगा झंडा फहराया था उसके मध्य में "वन्दे मातरम्" ही लिखा हुआ था।



अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने आर्य प्रिन्टिंग प्रेस, लाहौर तथा भारतीय प्रेस, देहरादून से सन् 1929 में "क्रान्ति गीतांजलि" नामक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें उन्होंने मातृ वंदना के नाम से इस गीत के दो पद दिये थे. साथ ही उन्होंने इस गीत के संबंध में वन्दे मातरम् शीर्षक से एक गजल भी लिखी थी.



बंग-भंग का विरोध करने के लिये 7 अगस्त 1905 को जुटी भीड़ के बीच किसी ने वन्दे मातरम् कहा और सहस्रों कंठों ने समवेत स्वर में इसे दोहराया तो पूरा आसमान वंदे मातरम के घोष से गूंज उठा. अरविन्द घोष ने इस अवसर का बड़ा रोमांचक चित्र खींचा है. अंग्रेज सरकार ने 1906 में वन्दे मातरम् को किसी अधिवेशन, जुलूस या सार्वजनिक स्थल पर गाने से प्रतिबंधित कर दिया गया. अंग्रेज सरकार के प्रतिबंधात्मक आदेशों की अवज्ञा करके 14 अप्रैल 1906 को एक

पूरा जुलूस वन्दे मातरम् के बैज लगाए हुए निकाला गया और पुलिस ने भयंकर लाठी चार्ज किया. मोतीलाल घोष और सुरेंद्र नाथ बनर्जी जैसे नेताओं ने पुलिस की लाठियाँ खाईं और वंदे मातरम् का घोष करते रहे. अगले दिन अधिवेशन फिर वन्दे मातरम् गीत से ही शुरू हुआ. श्री अरविन्द ने भी कलकत्ता से वन्दे मातरम् के नाम से एक अंग्रेजी दैनिक निकाला. सिस्टर निवेदिता ने प्रतिबंध के बावजूद निवेदिता गर्ल्स स्कूलों में वन्दे मातरम् को दैनिक प्रार्थनाओं में शामिल किया. गाँधीजी ने 1905 में लिखा- “आज लाखों लोग एक बात के लिए एकत्र होकर वन्दे मातरम् गाते हैं. मेरे विचार से इसने हमारे राष्ट्रीय गीत का दर्जा हासिल कर लिया है. मुझे यह पवित्र, भक्तिपरक और भावनात्मक गीत लगता है.”

मदनलाल ढींगरा, खुदीराम बोस, सूर्यसेन, रामप्रसाद बिस्मिल और अन्य बहुत से क्रांतिकारी वंदे मातरम् गाते हुए फांसी पर झूल गये. भगत सिंह अपने पिता को वंदे मातरम् से अभिवादन कर पत्र लिखते थे. सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज ने इस गीत को अंगीकार किया था और सिंगापुर रेडियो स्टेशन से इसका प्रसारण होता था.

रविन्द्रनाथ टैगौर, पं. पलुस्कर, दक्षिणरंजन सेन, दिलीप कुमार राय, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, केशवराव भोले, विष्णुपंथ पागनिस, मास्टर कृष्णावराव, वीडी अम्भाईकर, तिमिर बरन भाचार्य, हेमंत कुमार, एम एस सुब्बा लक्ष्मी, लता मंगेशकर आदि ने इसे अलग अलग रागों - काफी, मिश्र खंभावती, बिलावल, बागेश्वरी, झिंझौटी, कर्नाटक शैली आदि में गाया है. मास्टर कृष्णाराव ने पुणे में पचास हजार लोगों से इस गीत को गवाया. फिर उन्होंने पुलिसवालों के साथ इसे मार्च सांग बनाकर भी दिखाया। विदेशी बैण्डों पर बजाने लायक सिद्ध करने के लिए उन्होंने ब्रिटिश नेवल बैण्ड चीफ स्टेनले बिल्स की मदद से इसका संगीत तैयार करवाया. बी.बी.सी. द्वारा 2002 में कराये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार ‘वंदे मातरम्’ विश्व का दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय गीत है.

वन्दे मातरम् की राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृति

सन् 1937 में कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति बनाई जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद, सुभाष चंद्र बोस, आचार्य देवा एवं रविंद्र नाथ टैगोर शामिल थे. इस समिति ने कहा कि गीत के शुरुआती दो पद तो मातृभूमि की प्रशंसा में कहे गये हैं, लेकिन बाद के पदों में हिन्दू देवी-देवताओं का जिक्र है इसलिये इस गीत के शुरुआती दो पदों को ही राष्ट्र-गीत के रूप मान्य किया जाये. गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के जन-गण-मन अधिनायक जय हे को यथावत राष्ट्रगान ही रहने दिया गया और मोहम्मद इकबाल के कौमी तराने “सारे जहाँ से अच्छा” के साथ वन्दे मातरम् को राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत किया गया. स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सभा में 24 जनवरी 1950 को 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाने सम्बन्धी वक्तव्य पढ़ा जिसे स्वीकार कर लिया गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का संविधान सभा को दिया गया वक्तव्य:

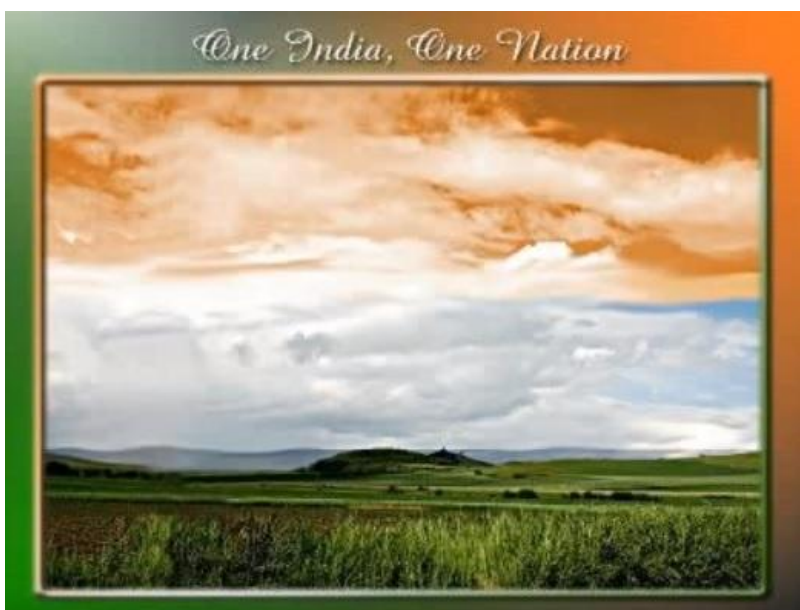
“शब्दों व संगीत की वह रचना जिसे जन गण मन से सम्बोधित किया जाता है, भारत का राष्ट्रगान है; बदलाव के ऐसे विषय, अवसर आने पर सरकार अधिकृत करे और वन्दे मातरम् गान, जिसने कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभायी है; को जन गण मन के समकक्ष सम्मान व पद मिले। (हर्षध्वनि)। मैं आशा करता हूँ कि यह सदस्यों को सन्तुष्ट करेगा।” (भारतीय संविधान परिषद, व्दादश खण्ड, 24-1-1950)

महान गायकों के स्वर में वंदेमातरम

लता मंगेशकर ने फिल्म आनंद मठ में इस गीत को हृदय से गाया है -



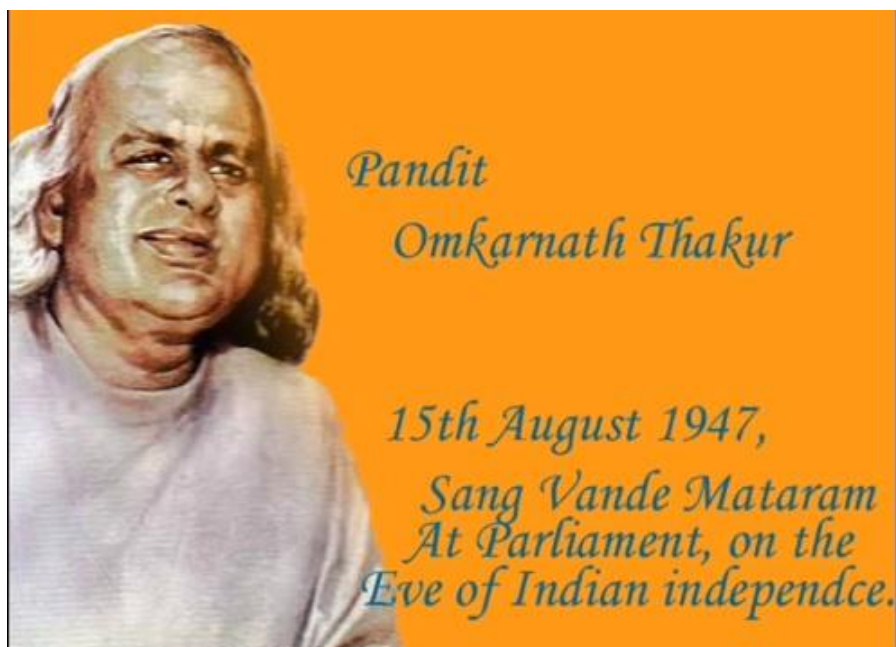
मशहूर कलाकार पंडित रविशंकर ने आकाशवाणी के लिये इस गीत को गाया है.



आधुनिक युग के महान संगीतकार ए. आर रहमान की आवाज़ में भी इस मधुर गीत को सुनिये -



इस गीत को शास्त्रीय संगीत के अनेक गायकों में भी अपने सुमधुर कंठ से गाया है. पहले ओंकार नाथ ठाकुर से इस गीत को सुनिये. उन्होंने यह गीत भारत की स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर संसद में गाया था -



एम एस सुबुलक्ष्मी एवं दिलीप कुमार राय ने रागमालिका में यह गीत बहुत ही सुंदर रूप में गाया है. सुनिये -



वन्दे मातरम् का विरोध

कांग्रेस के 1923 अधिवेशन में वन्दे मातरम् के विरोध में स्वर उठे. यहां तक कहा गया कि न केवल इस गीत का सन्दर्भ मुस्लिम विरोधी है बल्कि पूरा उपन्यास ही मुस्लिम विरोधी है. अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के 30 दिसम्बर 1908 के अधिवेशन में सैयद अली इमाम ने 'वन्दे मातरम्' को एक सांप्रदायिक आव्हान बताया. 1923 में काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अहमद अली ने शास्त्रीय संगीत के महान गायक पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर को वन्दे मातरम् गाने के बीच में टोका, लेकिन पं. पलुस्कर पूरा गाना गाकर ही रुके. सचाई यह है कि इस देश में असंख्य अल्पसंख्यक वन्दे मातरम् के प्रति श्रद्धा रखते हैं. खिलाफत आंदोलन के अधिवेशनों की शुरुआत भी वन्दे मातरम् से होती थी और अहमद अली, शौकत अली, जफर अली जैसे वरिष्ठ मुस्लिम नेता इसके सम्मान में उठकर खड़े होते थे. बंगाल के विभाजन के समय हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इसे गाते थे.

राष्ट्रगान को गाने के लिये मजबूर करने का प्रश्न सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष बिजोय एम्मानुएल वर्सेस केरल राज्य के प्रकरण में उठाया गया था. सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि यदि कोई व्यक्ति राष्ट्रगान का सम्मान करता है पर उसे गाता नहीं है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह इसका अपमान कर रहा है, अतः इसे न गाने के लिये उस व्यक्ति को दण्डित या प्रताड़ित नहीं किया जा सकता. चूँकि वन्दे मातरम् इस देश का राष्ट्रगीत है अतः इसको जबरदस्ती गाने के लिये मजबूर करने पर भी यही कानून व नियम लागू होगा. बड़े दुख की बात है कि हाल ही में वन्दे मातरम् गाने को लेकर फिर से विवाद उत्पन्न हुआ है.

श्री ए.जी. नूरानी ने जनवरी 1999 में फ्रंटलाइन पत्रिका में वंदेमातरम् गीत को मुस्लिम विरोधी बताते हुए एवं यह गीत मुस्लिमों द्वारा गाया जाना अनिवार्य करने का विरोध करते हुए एक लेख लिखा था. इस लेख में उन्होंने आनंदमठ उपन्यास को भी मुस्लिम विरोधी बताया था, तथा यह कहा था कि यह उपन्यास हिन्दुओं द्वारा मुस्लिम सत्ता के विरुद्ध विद्रोह की कहानी है न कि अंग्रेज़ी सत्ता के विरोध की. जुलाई 2017 में माननीय मद्रास उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि तमिल नाडु की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में सप्ताह में कम से कम 2 दिन वंदे मातरम् अनिवार्य रूप से गाया जाये. माननीय मद्रास उच्च न्यायालय के इस आदेश के बाद महाराष्ट्र विधान सभा में भाजपा विधायक श्री राजपुरोहित ने महाराष्ट्र की शिक्षण संस्थाओं में भी वंदेमातरम् गाना अनिवार्य करने की मांग की, जिसका अनेक मुस्लिम नेताओं ने कड़ा विरोध किया. बहुत से हिन्दु नेताओं ने कहना प्रारंभ कर दिया कि जो भारत में रहना चाहते हैं उन्हें वंदेमातरम् कहना ही होगा. जो ऐसा नहीं करना चाहते वे पाकिस्तान चले जायें.

यहां हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बहुत से मुस्लिम नेताओं ने वंदेमातरम् का समर्थन किया है. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने कहा है कि वंदे मातरम् गीत में इस्लाम के “वहादते दीन” (धर्म की एकता) और “सुलहे कुल” (वैश्विक शांति) की भावनाएं समाहित हैं. जब मौलाना आज़ाद कांग्रेस अध्यक्ष थे उस समय पार्टी के सभी सत्रों में वंदे मातरम् गाया जाता था. रफी अहमद किदवई जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिमंडल के सदस्य थे. उन्होंने भी वंदे मातरम् का समर्थन किया है. आरिफ मोहम्मद खान ने वंदेमातरम् का उर्दू में अनुवाद किया है. वे लंबे समय तक संसद सदस्य थे. उन्होंने वंदे मातरम् के संबंध में आउटलुक पत्रिका में एक लेख में लिखा था कि वंदे मातरम् का विरोध धार्मिक कारणों से

नहीं बल्कि ऐसी अलगाववादी ताकतों के द्वारा किया जाता है जिनके कारण देश का विभाजन हुआ. उन्होंने लिखा कि -

“From the Islamic viewpoint, the basic yardstick of an action is Innamal Aamalu Binnyat (action depends on intention). Hailing or saluting Motherland or singing its beauty and beneficence is not sajda.” जाने माने शिक्षाविद फीरोज़ बख्त ने 2006 में पायनियर अखबार में लिखा था - **“The melody, the thought content and the ambience of patriotism of Vande Mataram is unmatched. It is high time that the so-called Muslim leaders stopped politicising the issue of Vande Mataram to promote their mucky politics. As a Muslim, I would like to convey a message to all my countrymen and especially my own community that some politically motivated people are trying to make an emotive issue out of Vande Mataram, a gem of a song and perhaps the song that in my view should have been the national anthem in place of Jana gana mana...”**

सरफ़रोशी की तमन्ना

यह गज़ल भारत के स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों का सिंहनाद हुआ करती थी. न जाने कितने ही वीर इसे गाते हुए खुशी-खुशी फांसी के फंदे पर झूल गए. मनोजकुमार की फिल्म शहीद में इसे मन्ना डे, मोहम्मद रफी और राजेन्द्र मेहता ने दिल लगाकर गाया है. आइये पहले गज़ल सुनते हैं -



गज़ल का मूल पाठ (उर्दू के कठिन शब्दों के हिन्दी अर्थ के साथ)

सरफ़रोशी (सर बेचना - विद्रोह करना) की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है

ऐ शहीद-ए-मुल्क-ओ-मिल्लत (देश और समाज के लिये शहीद) मैं तिरे ऊपर निसार
ले तिरी हिम्मत का चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है

वाए (अफ़सोस) किस्मत पाँव की ऐ ज़ोफ़ (कमज़ोर) कुछ चलती नहीं
कारवाँ अपना अभी तक पहली ही मंज़िल में है

रहरव-ए-राह-ए-मोहब्बत (प्रेम की राह का साथी) रह न जाना राह में
लज़ज़त-ए-सहरा-नवर्दी (रेगिस्तान की सैर का मज़ा) दूरी-ए-मंज़िल में है

शौक़ से राह-ए-मोहब्बत की मुसीबत झेल ले
इक़ खुशी का राज़ पिन्हाँ (छुपा हुआ राज़) जादा-ए-मंज़िल (मंज़िल का रास्ता) में है

आज फिर मक़तल (कत्लखाना) में क़ातिल कह रहा है बार बार
आएँ वो शौक़-ए-शहादत जिन के जिन के दिल में है

मरने वालो आओ अब गर्दन कटाओ शौक़ से
ये ग़नीमत वक़्त है खंजर क़फ़-ए-क़ातिल (क़ातिल का हाथ) में है

माने-ए-इज़हार (व्यक्त करने पर रोक) तुम को है हया (लज्जा), हम को अदब
(शिष्टता)

कुछ तुम्हारे दिल के अंदर कुछ हमारे दिल में है

मय-क़दा सुनसान ख़ुम (शराब रखने का बड़ा मटका) उल्टे पड़े हैं ज़ाम चूर
सर-निगूँ (सर झुकाए-हारा हुआ) बैठा है साक़ी जो तिरी महफ़िल में है

वक़्त आने दे दिखा देंगे तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है

अब न अगले वलवले हैं और न वो अरमाँ की भीड़
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत इक दिल-ए-'बिस्मिल' में है

बहुत से लोग सोचते हैं कि यह ग़ज़ल प्रसिद्ध क्रांतिकारी और अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखी है, परन्तु सच यह है कि इसे पटना के शायर बिस्मिल अज़ीमाबादी ने लिखा था. यह बात राम प्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाकुल्ला ख़ान पर शोध कर चुके सुधीर विद्यार्थी ने भी मानी है और प्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफ़ेसर इम्तियाज़ ने भी इसकी तस्दीक की है. प्रोफ़ेसर इम्तियाज़ के मुताबिक़, उनके एक दोस्त स्व. रिज़वान अहमद इस ग़ज़ल पर शोध कर चुके हैं, जिसे कई किस्तों में उन्होंने अपने अख़बार 'अज़ीमाबाद एक्सप्रेस' में प्रकाशित किया था. बिस्मिल अज़ीमाबादी के पोते मुनव्वर हसन के अनुसार यह ग़ज़ल आज़ादी की लड़ाई के वक़्त काज़ी अब्दुल ग़फ़ार की पत्रिका 'सबाह' में 1922 में छपी, तो अंग्रेज़ी हुकूमत तिलमिला गई और इसे ज़ब्त कर लिया गया.



अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल



शायर बिस्मिल अज़ीमाबादी

बिस्मिल अज़ीमाबादी का असली नाम सैय्यद शाह मोहम्मद हसन था. वो 1901 में पटना से 30 किमी दूर हरदास बिगहा गांव में पैदा हुए थे. लेकिन अपने पिता सैय्यद शाह आले हसन की मौत के बाद वो अपने नाना के घर पटना सिटी आ गए, जिसे लोग उस समय अज़ीमाबाद के नाम से जानते थे. जब उन्होंने शायरी शुरू की तो अपना नाम बिस्मिल अज़ीमाबादी रख लिया और उसी नाम से मशहूर हुए. यह गज़ल उर्दू छन्द बहरे-रमल में लिखी गई है जिसे हिन्दी में अष्टपदीय गीतिका छन्द कहा जा सकता है. गज़ल के कुछ और शेर भी देखिए -

करता नहीं क्यूँ दूसरा कुछ बातचीत,
देखता हूँ मैं जिसे वो चुप तेरी महफ़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

वक़्त आने पर बता देंगे तुझे, ए आसमान
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

खेंच कर लाई है सब को क़त्ल होने की उमीद,
आशिक़ों का आज ज़मघट कूच-ए-क्रांतिल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

है लिये हथियार दुश्मन, ताक में बैठा उधर
और हम तैय्यार हैं; सीना लिये अपना इधर।
खून से खेलेंगे होली, गर वतन मुश्किल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

हाथ, जिन में हो जुनूँ, कटते नहीं तलवार से;
सर जो उठ जाते हैं वो, झुकते नहीं ललकार से।
और भड़केगा जो शोला, सा हमारे दिल में है;
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

हम तो निकले ही थे घर से, बाँधकर सर पे कफ़न
जाँ हथेली पर लिये लो, बढ चले हैं ये कदम।
जिन्दगी तो अपनी महमाँ, मौत की महफ़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

दिल में तूफ़ानों की टोली और नसों में इन्कलाब;
होश दुश्मन के उड़ा, देंगे हमें रोको न आज।
दूर रह पाये जो हमसे, दम कहाँ मंज़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

जिस्म वो क्या जिस्म है, जिसमें न हो खूने-जुनूँ;
क्या लड़े तूफ़ाँ से, जो कश्ती-ए-साहिल में है।
सरफ़रोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

दरअसल, यह ग़ज़ल मैनपुरी षडयन्त्र व काकोरी काण्ड में शामिल होने वाले भारत के महान क्रान्तिकारी नेता रामप्रसाद 'बिस्मिल' की जुबान पर हर वक़्त रहती थी. वर्ष 1927 में सूली पर चढ़ते समय भी यह ग़ज़ल उनकी जुबान पर थी. बिस्मिल के इंकलाबी साथी जेल से पुलिस की लारी में जाते हुए, कोर्ट में मजिस्ट्रेट के

सामने पेश होते हुए और लौटकर जेल आते हुए एक सुर में इस गज़ल को गाया करते थे. 'बिस्मिल' की शहादत के बाद इसे स्वतन्त्रता सेनानियों की नौजवान पीढ़ी जैसे शहीद भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद आदि के साथ भी जोड़ा जाता रहा है.

इस गज़ल को राम प्रसाद 'बिस्मिल' के साथ जोड़कर बड़े रोचक किस्से भी बन गए हैं. एक किस्सा यूँ है कि एक बार अशफाक उल्ला खाँ बिस्मिल के पास किसी काम से आर्य समाज मन्दिर शाहजहाँपुर गये. दोनों गहरे मित्र थे. संयोग से उस समय अशफाक जिगर मुरादाबादी की यह गजल गुनगुना रहे थे-

"कौन जाने ये तमन्ना इश्क की मंजिल में है।

जो तमन्ना दिल से निकली फिर जो देखा दिल में है॥"

बिस्मिल यह शेर सुनकर मुस्करा दिये तो अशफाक ने पूछ ही लिया-"क्यों राम भाई! मैंने मिसरा कुछ गलत कह दिया क्या?"

इस पर बिस्मिल ने जबाब दिया- "नहीं मेरे कृष्ण कन्हैया! यह बात नहीं। मैं जिगर साहब की बहुत इज्जत करता हूँ मगर उन्होंने मिर्जा गालिब की पुरानी जमीन पर घिसा पिटा शेर कहकर कौन-सा बड़ा तीर मार लिया. कोई नयी रंगत देते तो मैं भी इरशाद कहता."

अशफाक को बिस्मिल की यह बात जँची नहीं. उन्होंने चुनौती भरे लहजे में कहा-
"तो राम भाई! अब आप ही इसमें गिरह लगाइये, मैं मान जाऊँगा आपकी
सोच जिगर और मिर्जा गालिब से भी परले दर्जे की है."

उसी वक्त राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने ये शेर कहा-

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-कातिल में है?"

यह सुनते ही अशफाक उछल पड़े और बिस्मिल को गले लगा के बोले- "राम भाई!
मान गये. आप तो उस्तादों के भी उस्ताद हैं."

एक किस्सा यह भी है कि - काकोरी कांड में गिरफ्तार होने के बाद कोर्ट में
सुनवाई के दौरान जज ने बिस्मिल को गलती से मुलाजिम की जगह मुलाजिम कह
दिया तो बिस्मिल ने यह शेर कहे -

'मुलाजिम हमको मत कहिए, बड़ा अफसोस होता है,
अदालत के अदब से हम यहां तशरीफ लाए हैं.
पलट देते हैं हम मौजे-हवादिस अपनी जुरत से
कि हमने आंधियों में भी चिराग अक्सर जलाए हैं'

देश के लिये कुबार्नी देने वाले अमर शहीद राम प्राद बिस्मिल की अंतिम रचना यह कही जाती है -

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या.
दिल की बर्बादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या !

मिट गई जब सब उम्मीदें मिट गए जब सब खयाल,
उस घड़ी गर नामावर लेकर पयाम आया तो क्या !

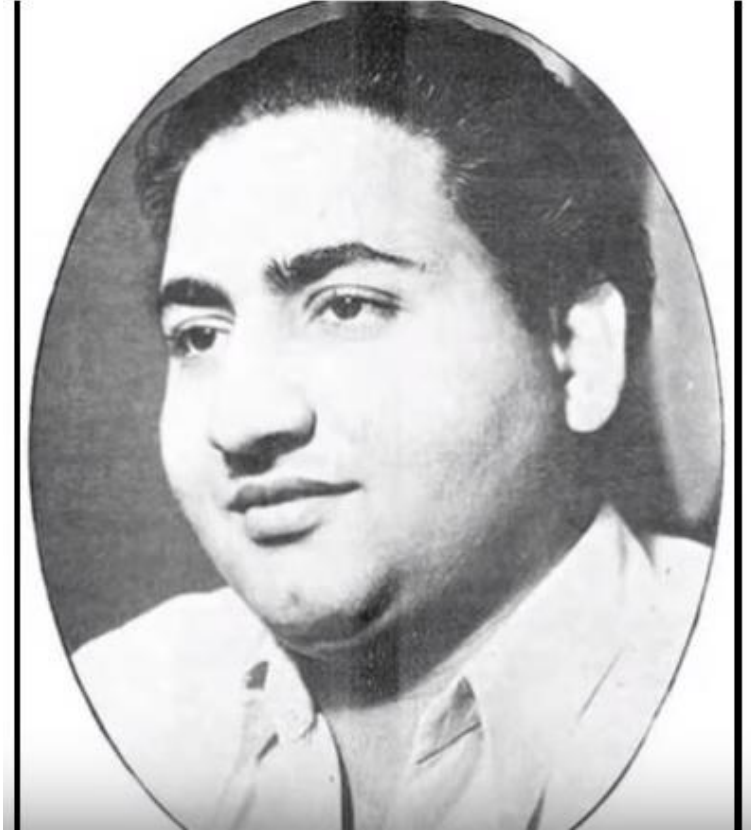
ऐ दिले-नादान मिट जा तू भी कू-ए-यार में
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या

काश! अपनी जिंदगी में हम वो मंजर देखते
यूं सरे-तुर्बत कोई महशर-खिराम आया तो क्या

आखिरी शब दीद के काबिल थी 'बिस्मिल' की तड़प
सुब्ह-दम कोई अगर बाला-ए-बाम आया तो क्या!

सरफरोशी की तमन्ना भारत के लिये क्रांति का पैगाम लेकर आई थी. देश के पापुलर कल्चर में इस गज़ल का बहुत ऊंचा मकाम है.

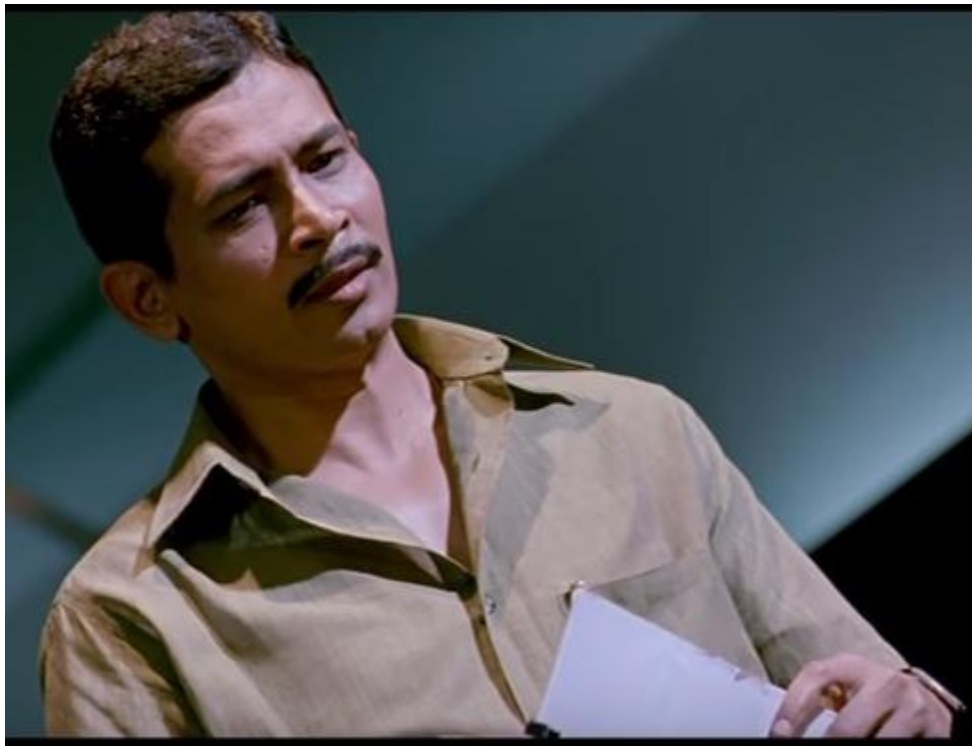
फिल्मों में सबसे पहले इसे 1954 में आई फिल्म शहीदे आज़म भगत सिंह में मोहम्मद रफी ने गाया था. आइये सुनते हैं -



यह फिल्म ज़्यादा नहीं चली, पर इसके बाद आई मनोज कुमार की इसी नाम की फिल्म सुपरहिट हो गई. मनोज कुमार की फिल्म में यह गज़ल बहुत ही मार्मिक ढंग से फिल्माई गई थी, जिसे हम ऊपर देख चुके हैं. इसके बाद अनेक फिल्मों में इस गज़ल को दिखाया गया है. जब कभी यह गज़ल स्क्रीन पर बजती है तो, देखने वालों के देशभक्ति से रोंगटे खड़े हो जाते हैं. फिल्म लीजेंड आफ भगत सिंह में इसे ए.आर. रहमान ने संगीत में ढाला है -



फिल्म रंग दे बसंती में इसका कविता के रूप में बहुत सटीक ढंग से उपयोग किया गया है -



अनुराग कश्यप की फिल्म गुलाल में इस महान देशभक्तिपूर्ण गज़ल की पैरोडी बनाकर और पीयूष मिश्रा व्दारा अभिनीत एक अर्धपागल पात्र से गवाकर वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिस्थिति पर गहरा व्यंग्य किया गया है -



आज़ाद हिन्द फौज के कौमी तराने

A Z A D



H I N D

आज़ाद हिन्द सेना का झंडा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास आज़ाद हिन्द सेना और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के ज़िक्र के बिना अधूरा है. शुरू में रासबिहारी बोस ने जापानियों की सहायता से दक्षिण-पूर्वी एशिया में करीब 40,000 भारतीयों की सेना या इन्डियन नेशनल आर्मी (INA) का गठन शुरू किया और आज़ाद हिन्द फ़ौज का नाम दिया. इस फ़ौज की शुरुवात जापानियों व्दारा बनाए गए भारतीय युध्दबन्दियों हुई. बाद में

इसमें बर्मा और मलाया में रहने वाले भारतीय भी भर्ती किये गये. दिनांक 4 जुलाई 1943 को उन्होंने नेताजी सुभाषचंद्र बोस को आज़ाद हिन्द फौज़ का सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त करके उनके हाथों में इसकी कमान सौंप दी. अगले दिन 5 जुलाई को नेताजी ने सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए "दिल्ली चलो!" का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना से बर्मा, इम्फाल और कोहिमा में जमकर मोर्चा लिया. सुभाष बोस ने 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड ने मान्यता दी. जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये. आजाद हिन्द फौज ने 4 फ़रवरी 1944 को अंग्रेजों पर दोबारा भयंकर आक्रमण किया और कोहिमा, पलेल आदि कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया. नेताजी सुभाष बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो स्टेशन प्रसारण करके जीत के महात्मा गांधी की शुभकामनाएँ माँगीं. सुभाष बोस के यह मार्मिक शब्द जो उन्होंने 22 सितम्बर 1944 को शहीदी दिवस मनाते हुये कहे थे कभी भुलाए नहीं जा सकते -

हमारी मातृभूमि स्वतन्त्रता की खोज में है. तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा. यह स्वतन्त्रता की देवी की माँग है.

आकाशवाणी की आर्काइव से नेताजी के 1943 के भाषण की रिकार्डिंग सुनिये



आज़ाद हिन्द फौज़ के गुमनाम शहीदों की याद में सिंगापुर के एस्प्लेनेड पार्क में **आईएनए वार मेमोरियल** बनाया गया था. सुभाष चन्द्र बोस ने 8 जुलाई 1945 को इस स्मारक पर जाकर अनाम सैनिकों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी. जब ब्रिटिश सेनाओं ने सिंगापुर पर कब्ज़ा किया तो माउण्टबेटन के आदेश से इसे ध्वस्त कर दिया. इस स्मारक पर आज़ाद हिन्द फौज़ के तीन ध्येयवाचक शब्द - **इत्तेफ़ाक़** (एकता), **एतमाद** (विश्वास) और **कुर्बानी** (बलिदान) लिखे हुए थे. सिंगापुर की नेशनल हैरिटेज बोर्ड ने 1995 में वहाँ के भारतीयों के सहयोग से इण्डियन नेशनल आर्मी की बेहद खूबसूरत स्मृति पट्टिका उसी जगह स्थापित की.



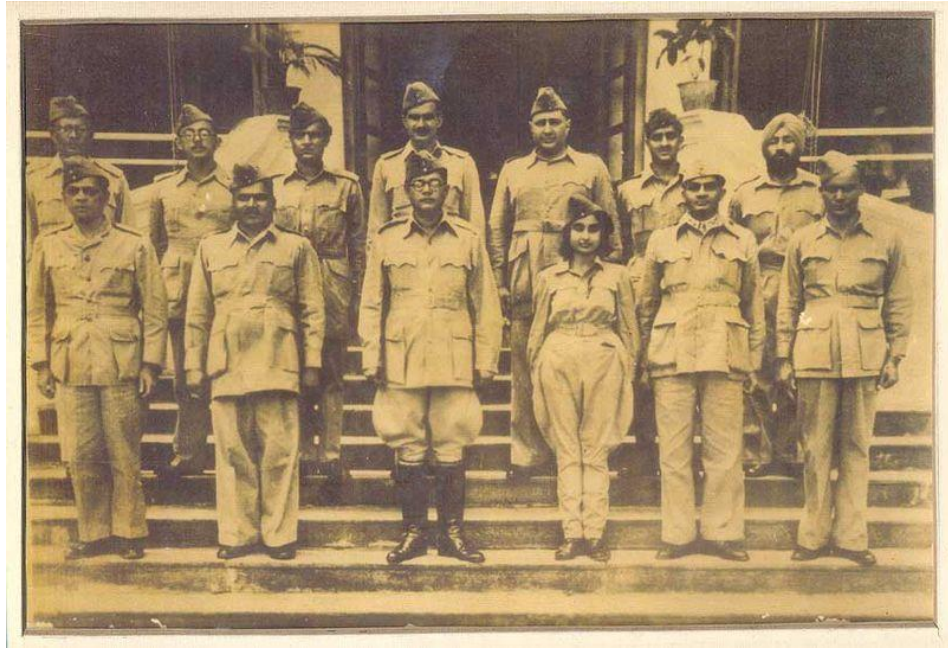
सिंगापुर में आईएनए स्मारक

आज़ाद हिन्द सेना ने मणिपुर घाटी का 1,500 वर्ग मील का क्षेत्र ब्रिटिश से मुक्त करा लिया, और दिनांक 14 अप्रैल 1944 को बहादुर ग्रुप के कमांडर कर्नल एस.ए. मलिक ने मोइरांग कंगला पर तिरंगा फहराया. इसी स्थान से पूरे मणिपुर का प्रशासन लगभग 3 माह तक चलाया गया. इस स्थान पर आज आई.एन.ए. का स्मारक है.



मोइरांग में आई.एन.ए. स्मारक

नवम्बर 1945 से लेकर मई 1946 तक आजाद हिन्द फौज के 17 हजार जवानों और अधिकारियों का कोर्ट-मार्शल किया गया. पहला और सबसे प्रसिद्ध मुकदमा दिल्ली के लाल किले में कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरुबख्श सिंह दिल्ली तथा मेजर जनरल शाहनवाज खान पर संयुक्त रूप से चला.



आज़ाद हिन्द फौज के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस

इन मुकदमों के विरोध में जनक्रोध उबल पड़ा. लाल किले से आई आवाज-सहगल, ढिल्लन, शहनवाज़ - इस नारे ने उस आजादी के लिए लड़ रहे लाखों लोगों को एक सूत्र में बांध दिया. सर तेज बहादुर सप्रू के नेतृत्व में नामी वकील भूलाभाई देसाई, सर दिलीपसिंह, आसफ अली, पं. जवाहरलाल नेहरू, बख्शी सर टेकचंद, कैलाशनाथ काटजू, जुगलकिशोर खन्ना, सुल्तान यार खान, राय बहादुर बद्रीदास, पी.एस. सेन, रघुनंदन सरन आदि की टीम ने यह मुकदमा लड़ा. सहगल, ढिल्लन और शाहनवाज के अलावा आजाद हिन्द फौज के अन्य सैनिक भी रिहा हो गए. अंग्रेजी सरकार के कमाण्डर-इन-चीफ सर क्लॉड अक्लनिक ने इन जवानों की उम्र कैद सजा माफ कर दी. हवा का रुख भांपकर वे समझ गए, कि अगर इनको सजा दी गई तो हिन्दुस्तानी फौज में बगावत हो जाएगी.

आज़ाद हिन्द सेना के सिपाहियों में जोश भरने के लिये बहुत से कौमी तराने बनाए गये थे. इन गीतों तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने पाबंदी लगा दी थी. आइये कुछ प्रसिद्ध गीतों के बारे में जानते हैं.

कदम-कदम बढ़ाए जा

यह आज भारतीय सेना का मार्चिंग गीत है. इस गीत को सुभाष बोस - द फारगाटेन हीरो में ए.आर.रहमान ने संगीज में पिरोया है. आइये सुनते हैं -



इस जोश भरे गीत को रामसिंह ठाकुर ने लिखा हैं. गीत के बोल नीचे दिये गये हैं-

कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा,
यह जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा.

तू शेर हिन्द आगे बढ़, मरने से फिर भी तू न डर,
उड़ा के दुश्मनों का सर, जोश-वतन बढ़ाए जा.

तेरी हिम्मत बढ़ती रहे, खुदा तेरी सुनता रहे,
जो सामने तेरे अड़े, तो خاک में मिलाए जा.

चलो देहली पुकार के, कौमी निशाँ सँभाल के,
लाल किले पे गाड़ के, लहराए जा, लहराए जा.

इसी गीत को समाधि फिल्म में सी.रामचंद्र ने संगीतबद्ध किया था और चितलकर जी ने गाया था -



हम देहली-देहली जाएँगे

यह खूबसूरत गीत नेताजी के दिल्ली चलो नारे पर आधारित है. इसके गीतकार मुमताज़ हुसैन और संगीतकार रामसिंह ठाकुर थे. गीत के बोल नीचे दिये गये हैं -

हम देहली-देहली जाएँगे, हम अपना हिंद बनाएँगे
अब फौजी बनके रहना है, दुःख-दर्द, मुसीबत सहना है
सुभाष का कहना-कहना है, चलो देहली चलके रहना है

हम गोली खा के झूमेंगे, हम मौत को बढ़कर चूमेंगे
मतवाले बन आजादी के, हम दरिया जंगल घूमेंगे

सुभाष हमारा साथ ही है, और रासबिहारी साथ है
फिर कैसा खतरा बाकी है, खुदा हमारा साथी है

हम फौजी बन के आएँगे, हम देहली तक बचाएँगे
ज़ालिम फिरंगी क़ौम का, हम नामो-निशान मिटाएँगे

सुभाष बोस - द फारगाटेन हीरो में ए.आर.रहमान के संगीत में यह गीत सुनिये -



सुभाष जी सुभाष जी

यह गीत के गीतकार मुमताज़ हुसैन और संगीतकार रामसिंह ठाकुर हैं. जब सुभाष बोस 90 दिनों की खतरनाक पनडुब्बी यात्रा के बाद सिंगापुर पहुंचे तो आजाद हिन्द फौज़ ने यही गीत गाकर उनका स्वागत किया था. कलकत्ता यूथ कायर ने इस गीत को बड़ी खूबसूरती से गाया है -



सुभाष जी सुभाष जी...
वह जाने हिन्द आ गए,
है नाज़ जिस पे हिन्द को, वह जाने हिन्द आ गए

सुभाष जाने - हिन्द है, सुभाष माने हिन्द है
सुभाष आने हिन्द है, सुभाष शाने हिन्द है

कली-कली-कली-कली, अन्दलीब वह चली
गली-गली-गली-गली, वह आम हलक जा रहे

वह आने हिन्द लाएँगे, वह शाने हिन्द लाएँगे
फिरंगियों की कौम पर, वह कहर बन के छाएँगे

खुशी का दौर आ गया, निशात बन के छा गया
वह एशिया का आफ़ताब, एशिया में आ गया
सुभाष जी, सुभाष जी...

हम भारत की बेटी हैं

हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार
हम मरने से नहीं डरतीं, नहीं पीछे पाँव को धरतीं
आगे ही आगे बढ़तीं, कस कमर हुई तैयार
हम भारत की बेटी...

हम नए नहीं हैं लड़ाके, देखो इतिहास उठा के
हम छात्राणी भारत की, दिखला देंगी निज वार
हम भारत की बेटी...

जब कर कृपाण उठातीं, फिर काल रूप बन जातीं
सदियों से प्यास बुझातीं थरा देतीं संसार
हम भारत की बेटी...

जब तक बाँहों में बल है, धमनियों में रक्त प्रबल है
दिल में नहीं पल भर कल है, बिना किए देश उद्धार
हम भारत की बेटी...

बलदेवसिंह का लिखा और रामसिंह ठाकुर का संगीत में पिरोया यह गीत रानी झांसी ब्रिगेड की कैप्टेन लक्ष्मी सहगल के प्रति सम्मान भी है, और आज़ाद हिन्द सेना की महिला फौजियों की वीरगाथा भी -



उठो सोए भारत के नसीबों को जगा दो

यह जोश भरा गीत कर्नल जी.एस. ढिल्लन ने लिखा था और रामसिंह ठाकुर ने संगीत दिया था, जिसे गाते हुए आज़ाद हिन्द सेना के बहादुर सैनिकों ने भारत के बड़े भूभाग को मुक्त कराया था. मेरा सौभाग्य है कि मुझे कर्नल साहब से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिला, जब मैं शिवपुरी ज़िले में कलेक्टर था और कर्नल साहब वहां पर कृषि कार्य कर रहे थे. गीत के बोल हैं -

उठो सोए भारत के नसीबों को जगा दो
आजादी यूँ लेते हैं जवाँ, ले के दिखा दो

खूँखार बनो शेर मेरे हिन्दी सिपाही
दुश्मन की सफ़े तोड़ दो एक तहलका मचा दो

आ हिन्द के बदल में उदू चीज़ ही क्या है
गर रास्ते में हो भाई, उसे मार गिरा दो

मीनारे-कुतुब देखता है राह तुम्हारी,
चल, उसकी बुलन्दी को तिरंगे से सजा दो

कर याद शहीदों का लहू देश की खातिर
एक-दो भी दुश्मन को हजारों से लड़ा दो

क्यों लाल किला यूँ रहे दुश्मन के हवाले
हर लश्करे-हिन्दी की वहाँ धूम मचा दो।

हो भूख, हो तकलीफ़, रुकावट हो थकावट
वहाँ जख्म गिरा मौत को भी हँस के दिखा दो।

और कोई ख्वाहिश है न तमन्ना मेरे दिल में,
आजाद वतन हिन्द में जय हिन्द बुला दो।



हे वीर बालकों

रामसिंह ठाकुर ने यह गीत आज़ाद हिन्द फौज के बच्चों के लिये गोर्खाली भाषा में लिखा था और इसे एक बड़ी मधुर जापानी धुन में संगीत दिया था.

हे वीर बालकों जाति लेई सुधार
आँधी बढ़ो हिम्मत बढ़ी लेई सिंगार
मौका हेईरी लाभ उठाई देश का करूँ उद्धार
अब ही होगा हमरो देश का उद्धार
हे वीर बालकों
अब ही हिम्मत ना हार
हे वीर बालकों...

सब ही मिल-जुलकर जय हिन्द पुकार
नेताजी जस ताको नाम पाने तरार
ओ ही हो नाम आचार
देश को कल्याण
हे वीर बालकों



सब सुख-चैन की बरखा बरसे

यह आज़ाद हिन्द सेना का राष्ट्रगीत था. इसे आबिद हुसैन ने लिखा था. आइये गीत सुनें -



भारत भाग्य है जागा

पंजाब सिंध गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंग

चंचल सागर विन्ध्य हिमालय

नीला यमुना गंगा

तेरे नित गुण गाएँ

तुझ से जीवन पाएँ

सब तन पाएँ आशा सूरज बनकर जग पर चमके

भारत नाम सुभागा।

जय हो- जय हो- जय हो,
भारत नाम सुभागा।

सबके दिल में प्रीत बसाए
तेरी मीठी वाणी
हर सूबे में रहने वाले
हर मज़हब के प्राणी
सब भेद और फ़र्क मिटा के सब गोद में तेरी आ के
गूँथें प्रेम की माला
सूरज बन के जग पर
चमके भारत नाम तुम्हारा
जय हो- जय हो- जय हो,
जय जय जय हो
भारत नाम सुभागा।

सुबह-सबरे पंख पखेरू तेरे ही गुण गाएँ बास भरी भरपूर हवाएँ
जीवन में ऋतु लाएँ
सब मिलकर जय हिन्द पुकारे
जय आज़ाद हिन्द के नारे
प्यारा देश हमारा
सूरज बन के जग पर
चमके भारत नाम तुम्हारा
जय हो- जय हो- जय हो, जय जय जय हो
भारत नाम सुभागा

झण्डा गीत

भारत का झण्डा गीत श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' ने लिखा था.



मूल गीत में 7 पद थे. झण्डा गीत का मूल पाठ नीचे दिया है -

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

सदा शक्ति सरसाने वाला

प्रेम-सुधा बरसाने वाला

वीरों को हरसाने वाला

मातृभूमि का तन-मन सारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 1।

लाल रंग बजरंगबली का
हरा अहल इस्लाम अली का
श्वेत सभी धर्मों का टीका
एक हुआ रंग न्यारा-न्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 2।

है चरखे का चित्र सँवारा
मानो चक्र सुदर्शन प्यारा
हरे रंग का संकट सारा
है यह सच्चा भाव हमारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 3।

स्वतन्त्रता के भीषण रण में
लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाये भय संकट सारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 4।

इस झण्डे के नीचे निर्भय
लैं स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 5।

आओ प्यारे वीरो आओ
देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ

एक साथ सब मिल कर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 6।

शान न इसकी जाने पाये
चाहें जान भले ही जाये
विश्व विजय कर के दिखलायें
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। 7।

वर्ष 1938 के हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने इस गीत के पद संख्या 1, 6 व 7 को संशोधित करके "झण्डा गीत" के रूप में स्वीकृति दी. नेताजी ने झण्डारोहण किया और वहाँ मौजूद करीब पाँच हजार लोगों ने इस गीत को एक सुर में गाया. यह गीत न केवल राष्ट्रीय गीत घोषित हुआ बल्कि अनेक नौजवानों और नवयुवतियों के लिये देश पर मर मिटने हेतु प्रेरणा का स्रोत भी बना.

झण्डा गीत के रचनाकार श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' कानपुर में नरवल के रहने वाले थे. उनका जन्म 16 सितंबर 1893 को हुआ था. वे कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे. वर्ष 1923 में वे फतेहपुर के जिला कांग्रेस अध्यक्ष भी बने. वे 'सचिव' नाम का एक अखबार भी निकालते थे. यह गीत उन्होंने गणेश शंकर 'विद्यार्थी' के अनुरोध पर लिखा था. कहते हैं कि यह पूरा गीत उन्होंने एक ही रात में लिख डाला था. उन्होंने 7 पदों का गीत लिखा, परन्तु महात्मा गांधी ने गीत को छोटा करने की सलाह दी. पण्डित चन्द्रिका प्रसाद 'जिज्ञासू' द्वारा सम्पादित पुस्तक राष्ट्रीय झण्डा अथवा स्वदेशी खादी में इस गीत के पद क्रमांक 2 और 3 को छोड़कर पाँच पद राष्ट्रीय झण्डा शीर्षक से छपे थे.

यह गीत पार्षद जी ने 15 अगस्त 1952 को लाल किले पर स्वयं गाया था. 15 अगस्त 1973 को उन्हें पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया गया.

यह गीत पृथ्वीराज कपूर, वनमाला, जयराज अभिनीत वर्ष 1948 की फिल्म आज़ादी की राह पर में बहादुर सोहराब नानजी ने गाया था. इस फिल्म के संगीतकार जी डी कपूर थे. वर्ष 1991 में बनी फिल्म फरिश्ते में यह गीत भप्पी लहरी के संगीत निर्देशन में शब्बीर कुमार ने गाया है. आइये सुनते हैं -



इस गीत को एक एनिमेशन फिल्म में भी देखते हैं -

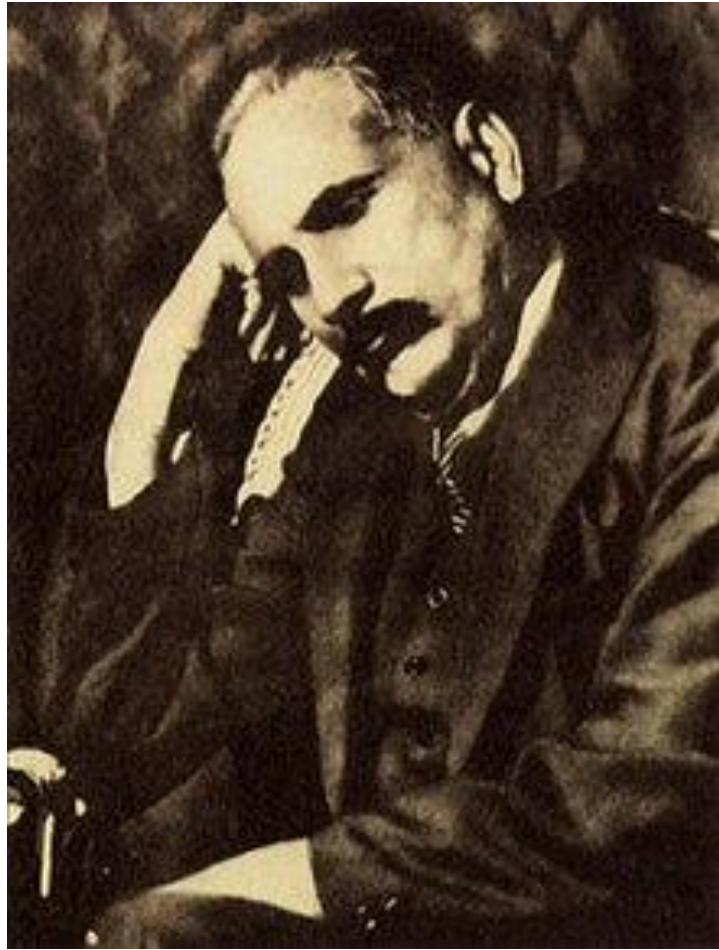


इसी गीत पर दूरदर्शन की एक फिल्म और देखिये -



सारे जहाँ से अच्छा

सर मुहम्मद इक़बाल की लिखी हुई इस प्रसिद्ध गज़ल का भारत की देशभक्तिपूर्ण शायरी में बहुत बड़ा स्थान है. इक़बाल ने इसे तराना-ए-हिन्दी अर्थात् हिन्द (या भारत) का गीत का नाम दिया था. सच में यह गीत भारत की महानता और भारतवासियों की एकता का उद्घोष करता है.



सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलसिताँ हमारा॥

गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा॥

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा॥

गोदी में खेलती हैं, उसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा॥

ऐ आब-ए-रूद-ए-गंगा! वो दिन है याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा॥

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा॥

यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रूमा, सब मिट गए जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी, नाम-ओ-निशाँ हमारा॥

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़माँ हमारा॥

'इक़बाल' कोई महरम, अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को, दर्द-ए-निहाँ हमारा॥

आगे बढ़ने के पहले आइये इस गीत को लता मंगेशकर की मधुर आवाज़ में सुनते हैं -



यह भी बड़ी विचित्र बात है कि भारत के इस महान देशभक्तिपूर्ण गीत को लिखने वाले सर मुहम्मद इक़बाल ने बाद में भारत के विभाजन और पकिस्तान के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की. इक़बाल का जन्म 9 नवम्बर 1877 को हुआ था. उर्दू और फ़ारसी में इनकी शायरी को आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ शायरी में गिना जाता है. इक़बाल के दादा सहज सप्रू हिंदू कश्मीरी पंडित थे जो बाद में सिआलकोट आ गए थे. असरार-ए-खुदी, रुमुज़-ए-बेखुदी और बंग-ए-दारा उनकी प्रमुख रचनाएं हैं. उन्हें अल्लामा (विद्वान) इक़बाल कहा जाता है. उन्हें मुफ़्फ़किर-ए-पाकिस्तान (पाकिस्तान का विचारक), शायर-ए-मशरीक़ (पूरब का शायर) और हकीम-उल-उम्मत (उम्मा का विद्वान) भी कहा जाता है. वे पाकिस्तान के राष्ट्रकवि माने जाते हैं. वर्ष 1923 में उन्हें सम्राट जार्ज पंचम ने सर की उपाधि दी थी. वर्ष 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में इक़बाल ने ही सबसे पहले अपने

अध्यक्षीय भाषण में भारत के विभाजन की मांग उठाई थी. इसके बाद इन्होंने जिन्ना को भी मुस्लिम लीग में शामिल होने के लिए प्रेरित किया और उनके साथ पाकिस्तान की स्थापना के लिए काम किया. इक़बाल का जन्मदिवस पाकिस्तान में राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है. इक़बाल का मज़ार भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है.



इक़बाल के इस प्रसिद्ध गीत को पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने बांसुरी की तान में बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत किया है -



व्दिराष्ट्र सिध्दांत स्वीकार करने के बाद इक़बाल की सोच में इतना परिवर्तन हो गया कि उन्होंने आपने ही गीत **तराना-ए-हिन्दी** के जवाब में खुद ही **तराना-ए-मिल्ली** लिखा जिसमें राष्ट्रवाद के बजाय मुस्लिम मज़हब का होने पर गर्व प्रदर्शित किया गया है -

तराना-ए-मिल्ली

चीन ओ अरब हमारा, हिन्दोस्तां हमारा
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहाँ हमारा

तौहीद की अमानत, सीनों में है हमारे
आसाँ नहीं मिटाना, नाम ओ निशाँ हमारा

दुनिया के बुतकदों में, पहले वह घर खुदा का
हम इस के पासबाँ हैं, वो पासबाँ हमारा

तेगों के साये में हम, पल कर जवाँ हुए हैं
खंजर हिलाल का है, क़ौमी निशाँ हमारा

मगरिब की वादियों में, गूँजी अज़ाँ हमारी
थमता न था किसी से, सैल-ए-रवाँ हमारा

बातिल से दबने वाले, ऐ आसमाँ नहीं हम
सौ बार कर चुका है, तू इम्तिहाँ हमारा

ऐ गुलिस्ताँ-ए-अंदलुस! वो दिन हैं याद तुझको
था तेरी डालियों में, जब आशियाँ हमारा

ऐ मौज-ए-दजला, तू भी पहचानती है हमको
अब तक है तेरा दरिया, अफ़सानाख़्वाँ हमारा

ऐ अर्ज़-ए-पाक तेरी, हुर्मत पे कट मरे हम
है खूँ तरी रगों में, अब तक रवाँ हमारा

सालार-ए-कारवाँ है, मीर-ए-हिजाज़ अपना
इस नाम से है बाक़ी, आराम-ए-जाँ हमारा

इक़बाल का तराना, बाँग-ए-दरा है गोया
होता है जादा पैमा, फिर कारवाँ हमारा

तराना-ए-मिल्ली भारत में पसंद नहीं किया जाता पर पाकिस्तान में इसे बड़ी शोहरत मिली हुई है. यू-ट्यूब पर उपलब्ध इस तराना-ए-मिल्ली को भी सुनकर देखिये. आप को इसमें इक़बाल का बदला हुआ रूप - उनकी मज़हब परस्ती साफ दिखाई देगी और - मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना - की धर्मनिरपेक्षता दूर-दूर तक भी नज़र नहीं आयेगी. इक़बाल के व्यक्तित्व का यह सबसे दुःखद पहलू है.



सारे जहां से अच्छा भारत में बेहद लोकप्रिय है. कहते हैं कि महात्मा गांधी जब 1930 में पुणे की यरवदा जेल में बंद थे, तो उन्होंने यह गीत 100 बार गाया था. वर्ष 1945 में पंडित रविशंकर मुम्बई में इष्टा के साथ काम कर रहे थे. उसी समय उन्होंने इस गीत की धुन बनाई. आइये कलकत्ता यूथ कायर व्दारा समूह गीत के रूप में प्रस्तुत इस गीत को सुनते हैं.



यह गीत फिल्मों में भी कई बार आया है. देव आनंद और शर्मिला टैगोर की फिल्म - यह गुलिस्तां हमारा में यह गीत फिल्माया गया है. वर्ष 1950 में बनी

राम दर्यानी की फिल्म भाई-बहन में इसे आशा भोंसले ने अपनी सुमधुर आवाज़ में गाया है –



इस गीत को पंडित रविशंकर की बनाई गई धुन में भारतीय सेना ने अपने मार्चिंग सांग के रूप में अंगीकार किया है. नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस की बीटिंग रिट्रीट के अवसर पर सेना के द्वारा इस गीत पर सुंदर मार्च देखिये -



इस गीत के साथ जुड़ी हुई एक बहुत ही दिलचस्प बात यह है कि भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री स्वर्ण लीडर राकेश शर्मा से अंतरिक्ष में बात करते हुए तत्कालीन

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जब उनसे पूछा कि ऊपर से भारत कैसा दिखाई देता है, तो उन्होंने उत्तर दिया - सारे जहां से अच्छा. आइये इस बातचीत का वीडियो देखते हैं -



साहिर लुधियानवी ने इस गीत पर एक व्यंग्यात्मक पैरोडी लिखी थी, जिसे 1958 की राजकपूर की फिल्म फिर सुबह होगी में मुकेश ने गाया है. यह पैरोडी भारत के गरीबों की हालत पर बड़ा तीखा तंज़ है -



और अब अंत में दूरदर्शन व्दारा तैयार किया गया और राजन बेज़बरुआ व्दारा गाया हुआ इस गीत का संस्कृत अनुवाद भी सुनिये.



झांसी की रानी

आइये आज बात करते हैं सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता – झांसी की रानी की. उनकी इस कविता ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय लोगों को आज़ादी की लड़ाई के लिये इतना प्रेरित किया कि यह कविता बच्चे-बच्चे की जुबान पर छा गई और झांसी की रानी की कहानी के साथ ही स्वयं सुभद्रा कुमारी चौहान भी एक किंवदंती बन गई. इस कविता में कुछ ही पंक्तियों में सुभद्रा कुमारी चौहान ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की पूरी जीवनगाथा और वीरता का ऐसा वर्णन किया है कि पढ़ने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते हैं.



सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के निकट निहालपुर गांव में हुआ था. खंडवा के ठाकुर लक्ष्मणसिंह से विवाह के पश्चात् वे जबलपुर आ गईं. बाद में वे महात्मा गांधी की अनुयायी हो गईं. वे पहली महिला सत्याग्रही थीं, और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने कई बार जेल की यातनाएं सहीं. आइये पहले उनकी कविता पढ़ते हैं.

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी॥

चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी॥

वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़॥

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आयी थी झाँसी में॥

चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई॥

निसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया॥

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया॥

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छिना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजौर, सतारा,कर्नाटक की कौन बिसात?
जब कि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात॥

बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

रानी रोयीं रनिवासों में, बेगम ग़म से थीं बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपुर के ज़ेवर ले लो लखनऊ के लो नौलख हार'॥

यों परदे की इज़्ज़त परदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान॥

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी॥

जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम॥

लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुया वंद असमानों में॥

ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार॥

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुहँ की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध श्रेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी॥

पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार॥

घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

रानी गई सिंधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता-नारी थी॥

दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी॥

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

इस कविता को भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर शुभा मुद्गल जी ने संसद के विशेष कार्यक्रम में गाया है, जिसे लोक सभा टेलीविज़न ने प्रस्तुत किया है.



इस बेहद रोमांचक कविता को अब एक एनिमेशन फिल्म में देखिये -



सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुछ और भी बहुत अच्छी देशभक्तिपूर्ण रचनाएं लिखी हैं, जो वर्षों से देश पर कुर्बान होने वालों को रोमांचित करती आई हैं. इनमें से कुछ महत्वपूर्ण रचनाएं नीचे देखिये -

वीरों का कैसा हो वसंत



जलियांवाला बाग में बंसंत



झाँसी की रानी की समाधि पर

